# तुम किस चक्की का आटा खाते हो ?

चन्दन यादव

ओंगना की डोलची, सैला, जोत, चकील, पार, धुरा, नाड़ी, डापका, डई ...

क्या तुम इन शब्दों के मतलब जानते हो? इन शब्दों के मतलब जानने से पहले मैं तुमसे एक और बात करना चाहता हूँ। इसके लिए थोड़ी-सी भूमिका बनाने की ज़रूरत होगी। तो बात यह है कि कई जगहों पर खेती के लिए पानी पर्याप्त मात्रा में मिल जाता है। वहाँ के किसानों की माली हालत ठीक-ठाक हो जाती है। मध्यप्रदेश में होशंगाबाद एक ऐसा ही ज़िला है। यहाँ के किसानों की माली हालत अच्छी होने का एक असर यह हुआ है कि कई किसानों ने बैलगाड़ी का उपयोग करना बन्द कर दिया। बैलगाड़ी की जगह ट्रैक्टर ने ले ली है। जो ट्रैक्टर नहीं ले पाए, वे भी बैलगाड़ी की जगह किराए से ट्रैक्टर लेकर काम करते हैं।

इसलिए वहाँ बैलगाड़ी चलन से बाहर हो रही है। पर वो अकेली चलन से बाहर नहीं होगी। वह अपने साथ ओंगना की डोलची, सैला, जोत, चकील, डापका, डई जैसे इस लेख के शुरू में लिखे शब्दों को भी लेकर जाएगी। इन शब्दों का सुनाई देना दुर्लभ हो जाएगा और बैलगाड़ी का दिखाई देना। कई सालों बाद ये शब्द गाँव की ज़िन्दगी पर लिखे किसी आँचलिक उपन्यास में ही मिल सकेंगे।

शब्दों का बचे रहना उतना ही सम्भव है जितने कि वो सुने जाते रहें, बोले और लिखे जाते रहें। अगर उनके इस्तेमाल करने वाले ना हों तो सिर्फ कुछ शब्द ही नहीं, पूरी की पूरी भाषा भी गुम हो जाती है। या किसी और भाषा में शामिल हो जाती है।

शब्द हमारे आसपास की दुनिया में मौजूद चीज़ों के नाम हैं। और चीज़ों के साथ-साथ वे हमारी भावनाओं जैसे खुशी, गुस्सा आदि और हमारे कामों जैसे चलना, दौड़ना, गिरना आदि के नाम भी हैं।

क्या इस बात से तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो कि हमारे पूर्वज, जो जंगलों में रहकर पत्थर से जानवरों का शिकार करके गुज़ारा करते थे, उनकी भाषा में कौन-कौन-से शब्द रहे होंगे? जैसे-जैसे उनकी ज़िन्दगी में नई-नई चीज़ें आती गई होंगी, वैसे-वैसे उन चीज़ों के नाम भी उनकी भाषा में शामिल होते गए होंगे। तुम अपने बड़ों से भी पूछ सकते हो कि पिछले चालीस-पचास सालों में कौन-कौन-सी ऐसी नई चीज़ें आई हैं, जो इसके पहले नहीं थीं? ज़ाहिर है नई चीज़ों के साथ उनके नाम, यानी नए शब्द भी हमारी भाषा में शामिल हुए होंगे।

हमने बैलगाड़ी के उदाहरण से बात शुरू की थी। पर ऐसी और भी बहुत-सी चीज़ें हैं जिनका चलन कम या बन्द होता जा रहा है। ऐसी ही एक चीज़ है घट्टी या चक्की। इसे हाथ से चलाकर अनाज पीसा जाता है। बिजली से चलने वाली आटा चक्की के आ जाने से घट्टी चलन से बाहर हो गई है, खासकर शहरों में। पर दूरदराज के गाँवों में अब भी लोग इसी का पिसा आटा खाते हैं। घट्टी के अलग-अलग हिस्से के अलग-अलग नाम हैं। जिनको वही लोग जानते होंगे जो इसका इस्तेमाल अब भी कर रहे हैं। इनमें से एक हिस्से का नाम है "थाला"। अगर तुम्हें घट्टी के बाकी पुर्जों का नाम पता करने में रुचि है, तो अपने आसपास के लोगों से पूछो, "उन्होंने किस चक्की का आटा खाया है ?"